Lecture-99.

# क्रॉमवेल की धार्मिक नीति एवं जनकल्याणकारी कार्य

– Mamta Rani
Guest Assist. Professor
Deptt. of History.
SNSRKS College, Saharsa.
BA Part – Ist
Paper – 2nd.

में भी सुधार हेतु अनेक उपाय किए ताकि लोगों को त्वरित न्याय प्राप्त हो सके। इसने डाक-तार, स्त्रियों के मताधिकार, गुप्त मतदान, विवाह, संसदीय कार्य, न्यायाधीशों के वेतन, बन्दीगृह आदि क्षेत्रों में सुधार हेतु अनेक प्रयास किए। शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने हेतु अनेकों नए स्कूल स्थापित करवाया। शिक्षा और साहित्य को प्रोत्साहन देने



हेतु इसने कई लेखकों को संरक्षण प्रदान किया। लोगों की सामाजिक दशा सुधारने हेतु इसने समाज में फैले अनेक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। इसने यातायात व्यवस्था सुदृढ़ एवं सुगम करने हेतु अनेक राजमार्गों का पुनर्निर्माण

17 Thursday 352-014 Week-51

करवाया। उसने अपने शासन व्यवस्था में प्रत्येक कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए अनेक नियम बनाए और उसे न मानने वालों के लिए दंड का भी प्रावधान किया। वह चाहता था कि लोगों का चरित्र ऊपर उठे, इसके लिए भी उसने प्रयास किया।

क्रामवेल की धार्मिक नीति:-

18 Friday 353-013 Week-51

क्रामवेल की गृह नीति के अन्तर्गत उसकी धार्मिक नीति भी उल्लेखनीय है। वह धार्मिक मामलों में सहनशील था, वह स्वयं प्युरिटन था, उसे कैथोलिक धर्म से घृणा थी और अंग्रेज विशप की ओर उसका विशेष झुकाव नहीं था फिर भी वह उदार हृदय का था। उसे यहूदियों को भी संरक्षण

13 Sunday 348-018 Week-50

Q:- क्रामवेल की जनकल्याण कार्य एवं धार्मिक नीति की विवेचना करें।

ANS:- ब्रिटेन के राजनैतिक इतिहास में क्रामवेल का शासन बहुत ही अहमियत रखता है। उसने अपने शासनकाल में अनेक प्रयोग किए, हलाँकि उनमें से अनेक असफल भी हुए। उसे अपने शासन काल में अनेकों गृहयुद्ध करना पड़ा परंतु फिर भी उसने जनकल्याण के कार्यों को नहीं भूला।

14 Monday 349-017 Week-51

क्रामवेल ने अपने शासन काल के दौरान शांति-व्यवस्था कायम रखने पर जोर दिया क्योंकि वह चाहता था कि लोग अपना व्यापार सुचारु रूप से करे जिससे लोगों की आर्थिक स्थिती में सुधार आया। उसने व्यापार की स्थिती में सुधार करने हेतु अनेक उपाय किए। उसने न्यायिक प्रक्रिया

और सुविधाएँ प्रदान की। उसने भ्रष्ट पादरियों को हटा कर चर्च में भी सुधार करने का प्रयास किया। एक लेखक ट्रिवेलियन के अनुसार प्रेजबिटेरियन्स, इनडिपेन्डेन्ट्स एवं बेपटिस्ट्स की तुलना में एंग्लीकन्स के साथ कम सहिष्णुता बरती, फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से उसके समय इन्हें अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी। उसने जनता के नैतिक चरित्र को अच्छा रखने हेतु नाच, गान, रेसिंग



आदि को निषिद्ध कर दिया। उसने धार्मिक आधार पर कभी भी किसी संप्रदाय के साथ 'बुरा नहीं किया'।

निष्कर्ष :- क्रामवेल निःसंदेह एक महान शासक, राजनीतिज्ञ और देशभक्त था उसके हृदय में लोगों की भलाई करने की भावना भरी हुई थी।